इकाई 8 आतंकवाद

रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 आतंकवाद की उत्पत्ति एवं परिभाषा

8.3 आतंकवाद का इतिहास

8.4 आतंकवाद के कारण

8.5 आतंकवाद के परिणाम

8.6 आतंकवाद और सामाजिक नैतिकता

8.7 सारांश

8.8 कुंजी शब्द

8.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.0 उद्देश्य

इस इकाई में, हम आज की दुनिया की चुनौतीपूर्ण स्थितियों में से एक, आतंकवाद की समीक्षा करने जा रहे हैं। हम आतंकवाद के अर्थ, इतिहास, कारणों, परिणामों और आतंकवाद के नैतिक पहलुओं की बेहतर समझ रखने के लिए आतंकवाद के सामान्य पहलुओं की जांच करते हैं।

इस इकाई के अंत तक, आप सक्षम होंगे;

- आतंकवाद की अवधारणा की समझ, विशेष कर इसकी उत्पत्ति और पारिभाषा
- आतंकवाद के इतिहास की समझ
- आतंकवाद के कारणों और परिणामों की पहचान करना, और

* डॉ. जॉय कइप्पननिकल, प्राध्यापक, क्रिस्टु महाविद्यालय, बैंग्लोर।

अनुवादक– डॉ. उपेन्द्र कुमार, अतिथि व्याख्याता, नॉन–कॉलिजियेट महिला शिक्षा बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय।

- आतंकवाद और सामाजिक नैतिकता के बीच की कड़ी की पहचान।

8.1 परिचय

हम एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जो लड़ाकू ताकतों से भयभीत है, जिसके लिए पूरी तरह से किसी एक विशेष क्षेत्र या देश, या किसी विशिष्ट धार्मिक या जातीय पहचान को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। आतंकवाद जीवन का और भौतिक वस्तुओं के नुकसान के अलावा अत्यधिक भय, असुरक्षा और चिंता की एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक स्थिति का निर्माण करता है। एक आतंकवादी गतिविधि अपने आश्चर्य और सदमे की रणनीति के कारण बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति और समाज को भारी नुकसान पहुंचा सकती है। निर्दोष लोगों में अधिकतम दहशत पैदा करने के लिए लक्ष्य को यादृच्छिक रूप से चुना जाता है। इन कृत्यों की प्रत्यक्ष क्रूरता सदमे और भय के तत्वों को जोड़ती है। आतंकवाद आमजनमत में और विदेशों में दुश्मनों की श्रेणी में सनसनी पैदा करना चाहता है।

8.2 'आतंकवाद' शब्द की उत्पत्ति एवं परिभाषा

आतंकवाद की उत्पत्ति के संबंध में कई मत हैं। एक सिद्धांत के अनुसार, आतंकवाद शब्द फ्रांसीसी शब्द आतंकवाद से आया है, जो लैटिन क्रिया टेरेरेरिन (पेशाब करने का कारण) पर आधारित है, और जो एक प्रकार की हिंसा या आसन्न हिंसा के खतरे को संदर्भित करता है। आतंकवाद को एक अवधारणा के रूप में सबसे पहले ब्रिटिश राजनेता एडमंड बर्क ने इस्तेमाल किया था। उन्होंने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान आतंक के शासन के संदर्भ में इसका इस्तेमाल किया। उन दिनों, आतंक को तानाशाही का एक उपकरण और सत्ता के प्रतीक के रूप में समझा जाता था।

हालांकि, आतंकवाद शब्द ने 18वीं शताब्दी ईस्वी में जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट के आगमन के साथ थोड़ा अलग अर्थ ग्रहण किया, जिन्होंने मानव जाति की नियति का वर्णन करने के लिए 1798 में इसके बारे में लिखा था। उन्होंने आतंकवाद का आशय जीवन की समस्याओं के लिए एक संयुक्त तरीके से विश्वास और आशा की हानि के रूप में दिया। यह मुक्ति के संघर्षों में अत्यधिक अकेलेपन के भयावह अनुभव का भी संकेत है।

आतंकवाद शब्द ने 19वीं शताब्दी में एक क्रांतिकारी अर्थ ग्रहण किया जब इसने हिंसा के अपराधियों और उनके पीड़ितों या उद्देश्यों दोनों की पहचान करने का प्रयास किया। उस समय किसी भी आतंकवादी हमले को राज्य के खिलाफ एक विशेष प्रकार के हिंसक

व्यवहार के रूप में देखा जाता था। यह कुछ राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समाज के सामान्य चलन को बाधित करने के उद्देश्य से किया गया हमला था। आतंकवाद में मनमानी बमबारी, राजनीतिक अपहरण, हत्या और सरकारी और व्यक्तिगत दोनों प्रकार की संपत्ति का विनाश शामिल है।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रवाद और राष्ट्रवादी हितों को आतंकवाद के मैदान में लाया गया। इसका तात्पर्य इस धारणा से है कि कोई निर्दोष गैर–लड़ाकू नहीं थे। विश्व युद्धों के बाद आतंकवाद को एक विशिष्ट अर्थ प्रदान किया। इस समय के दौरान आतंकवाद को इटली में फासीवाद और जर्मनी में नाजीवाद की पद्धतियों से जोड़ा जाने लगा। तब से, आतंकवाद और आतंकवादी शब्द एक मजबूत नकारात्मक स्वर लिए हुए हैं। इन शब्दों का प्रयोग अक्सर राजनीतिक ठप्पे के रूप में हिंसा की निंदा करने या यातना को युक्तिसंगत बनाने और यहां तक कि उन लोगों को फांसी देने के लिए किया जाता है जिन्हें आतंकवादी करार दिया जाता है।

हालांकि हम आतंकवाद और इसी तरह की गतिविधियों के बीच में रह रहे हैं, लेकिन आतंकवाद की घटना को सटीक रूप से परिभाषित करना मुश्किल है। हालांकि, इसे राज्य या कुछ राजनीतिक और व्यक्तिगत उद्देश्यों वाले व्यक्तियों के खिलाफ एक संगठित हिंसा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। पुनरू, यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद किसी व्यक्ति या संपत्ति के खिलाफ राजनीतिक या सामाजिक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए गैरकानूनी उपयोग या हिंसा की धमकी है। इसे कभी–कभी किसी सरकार, व्यक्तियों या समूहों को उनके व्यवहार या नीतियों को संशोधित करने के लिए डराने या धमकाने के लिए एक साधन के रूप में उपयोग किया जाता है।

ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड डिक्शनरी आतंकवाद को राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए या किसी सरकार को कृत्य करने के लिए मजबूर करने के लिए हिंसक कार्य के प्रयोग के रूप में परिभाषित करती है। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका आतंकवाद को राजनीतिक उद्देश्य प्राप्त करने के लिए सरकारों, जनता या व्यक्तियों के खिलाफ आतंक या अप्रत्याशित हिंसा के व्यवस्थित उपयोग के रूप में वर्णित करती है। यह राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए गैर–सरकारी समूहों की ओर से हिंसा का प्रयोग है। इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेज के अनुसार, आतंकवाद एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा एक

संगठित समूह या दल मुख्य रूप से हिंसा के व्यवस्थित उपयोग के माध्यम से अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहता है।

लोगों में दहशत और डर पैदा करने के लिए आतंकवादी तरह–तरह के हथकंडे अपनाते हैं। इनमें से कुछ विधियों में बंधक बनाना, अपहरण, राजनीतिक हत्या, अपहरण, बमबारी और विस्फोट शामिल हैं।

आतंकवाद के कई उद्देश्य हैं, जैसे, आंदोलन का विज्ञापन करना या आंदोलन की विचारधारा और ताकत का प्रचार करना; बड़े पैमाने पर समर्थन जुटाने के लिए और उग्रवाद के प्रति सहानुभूति रखने वालों से आग्रह करना; विरोधियों और मुखबिरों को खत्म करने और इस प्रकार आंदोलन के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर करना; लोगों का समर्थन करने और व्यवस्था बनाए रखने में सरकार की अक्षमता प्रदर्शित करना; आंतरिक स्थिरता को नष्ट करना और जनता के बीच भय और असुरक्षा की भावना पैदा करना; और अनुयायियों की निष्ठा और आज्ञाकारिता सुनिश्चित करना।

8.3 आतंकवाद का इतिहास

आज आतंकवाद का एक वृहत ऐतिहासिक विकास हुआ है। विभिन्न कारकों और घटनाओं के कारण ही यह वर्तमान स्वरूप में विकसित हुआ है। अमानवीयकरण का एक और विशिष्ट रूप फ्रेडरिक नीत्शे के विचारों में देखा जाता है जिन्होंने लोगों को उनकी बुद्धि के अनुसार वर्गीकृत किया और एक स्वामी और दास नैतिकता की बात की। यह भी एक तथ्य है कि लिंग, रंग, पंथ, मिथ्या विश्वास, रोजगार, शक्ति और मिथकों आदि के आधार पर अमानवीयकरण के कई अन्य रूप भी मौजूद थे।

यह घटनापूर्ण इतिहास दुनिया के दर्ज इतिहास जितना पुराना हो सकता है। बाइबिल का पुराना नियम खंड आतंक, हत्या, और विरोधियों पर सभी प्रकार की कठोर प्रथाओं का समर्थन करता है। शत्रुओं द्वारा राजाओं की हत्या, और उसके बाद वफादारों का क्रूर दमन, जूलियस सीज़र (ईसा पूर्व 44) के बाद से राजनीतिक चढ़ाई का एक स्थापित ढर्रा रहा है। इज़राइल में उत्साही (100 ईस्वी) ने कई तरीकों से रोमन कब्जे के खिलाफ लड़ाई लड़ी। यदि आतंकवाद को अमानवीयकरण की प्रक्रिया के रूप में सूक्ष्म रूप से समझा जा सकता है, तो यह याद किया जा सकता है कि ऐसा परिदृश्य प्राचीन रोम में मानव–जानवरों की लड़ाई के रूप में मौजूद था। इराक में हत्यारों (1100 ईस्वी) ने ईसाई धर्मयोद्धाओं से

आत्मघाती रणनीति के साथ संघर्ष किया। भारत में ठगों (1300 ईस्वी) ने अपने देवी–देवताओं की बलि देने के लिए यात्रियों का अपहरण कर लिया। स्पेनिश धर्माधिकरण (1469–1600 ईस्वी) ने विधर्मियों के साथ व्यवस्थित यातना से निपटा, और संपूर्ण मध्यकालीन युग ग्रामीण इलाकों को आतंकित करने पर आधारित था। लुडाइट्स (1811–1816 ई.) ने मशीनरी और आधुनिक तकनीक के किसी भी प्रतीक को नष्ट कर दिया। एक सर्बिया के आतंकवादी (1914 ईस्वी) ने प्रथम विश्व युद्ध शुरू किया. हिटलर के सत्ता में उदय (1932) में नरसंहार की योजनाएं शामिल थीं। आयरलैंड, साइप्रस, अल्जीरिया, ट्यूनीशिया और इज़राइल जैसे राष्ट्र शायद क्रांतिकारी आतंकवादी गतिविधियों के बिना कभी भी गणराज्य नहीं बन सकते थे। उपर्युक्त निष्कर्षों के आधार पर, आतंकवाद के लंबे और घटनापूर्ण इतिहास को आगे निम्नलिखित अवधियों में विभाजित किया जा सकता है;

1. **प्राचीन दुनिया में आतंक :** 66–73 ईसवी के दौरान फिलिस्तीन में आतंकवादी आंदोलन को इतिहास में दर्ज पहला आतंकवादी आंदोलन माना जाता है। एक आधुनिक आतंकवादी संगठन के पहलुओं को प्रदर्शित करने वाला सबसे पहला ज्ञात संगठन ज़ीलॉट्स था, जो यहूदी राष्ट्रवादियों का एक समूह था, जिन्होंने रोमन शासन में यहूदियों का प्रतिरोध किया था। रोमनों को शिकारी, या खंजर–पुरुषों के रूप में जाना जाता है, उन्होंने रोमन कब्जे वाली ताकतों के साथ–साथ कुछ यहूदियों को, उन्होंने सोचा कि उन्होंने रोमनों के साथ सहयोग किया था, जड़ से खत्म करने के लिए एक भूमिगत अभियान चलाया।

2. **मध्य युग में आतंक :** 13वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 17वीं शताब्दी तक, आतंकवाद और बर्बरता का व्यापक रूप से युद्ध और संघर्ष में उपयोग किया गया। 1648 ई. में वेस्टफेलिया की संधि के बाद आधुनिक राष्ट्र राज्य के उदय तक, जिस तरह से प्रमुख सत्ता और संगठित समाज आतंकवाद को प्रभावित करने का प्रयास मुश्किल से ही अस्तित्व में था। इसके अलावा, जैसा कि हम अब आतंकवाद को समझते हैं, यह तब तक संभव नहीं था जब तक कि बारूद, विस्फोटकों और आग लगाने वालों का आविष्कार नहीं हुआ। मध्य युग में बाद में फ्रांसीसी क्रांति के दौरान आतंकवाद की अवधारणा पेश की गई थी। कहा जाता है कि राज्य में कानून व्यवस्था स्थापित करने के लिए, सार्वजनिक सुरक्षा समिति ने 17,000 से अधिक लोगों को मार डाला। सरकार के इन गंभीर उपायों को

'आतंक का शासन' के रूप में जाना जाने लगा। सार्वजनिक सुरक्षा समिति और 'आतंक' की नीतियों को लागू करने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन के अभिकर्तओं को 'आतंकवादी' के रूप में संदर्भित किया गया था। इसे आतंकवाद शब्द की उत्पत्ति माना जाता है। हालांकि, गिलोटिन के पहली बार इस्तेमाल होने से बहुत पहले पेरिस की भीड़ द्वारा शुरू किए गए भयानक चश्मे के प्रयोग से प्रमुख अधिकारियों और अभिजात वर्ग की हत्या जैसी अतिरिक्त कानूनी गतिविधियां शुरू हुईं।

3. **आधुनिक और समकालीन युग में आतंकवाद :** आतंकवादी आधुनिक जटिलताओं की पृष्ठभूमि में अधिक विनाशकारी हो गए हैं। 19वीं शताब्दी के दौरान, छोटे यूरोपीय देशों में कुछ राष्ट्रवादी बड़े साम्राज्यों के शासन से मुक्त होना चाहते थे। जिन्हें आरजकतवादियों के रूप में जाना जाता हैं, उन्होंने पाया कि आतंक के कृत्यों को करके वे जो चाहते थे वह प्राप्त कर सकते थे। रूसी शासन को उखाड़ फेंकने का काम कर रहे क्रांतिकारी समूह और आयरिश राष्ट्रवादी समूह भी इसे समझते थे। इसलिए उन्होंने पश्चिमी यूरोप, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका में आतंकवाद को एक पद्धति के रूप में अपनाया। उनका मानना था कि क्रांतिकारी, राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करने का सबसे अच्छा तरीका जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों की हत्या करना है। 1865 ई. से कई राजाओं, राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों को अराजकतावादियों द्वारा मार दिया गया।

अगर शुरुआती आतंकवाद ने सत्ता में बैठे लोगों को निशाना बनाया, तो बीसवीं सदी में, आतंकवादियों ने उन निर्दोष नागरिकों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है, जिनका उस वास्तविक कारण से कोई संबंध नहीं है, जिसके लिए वे लड़ रहे हैं। आज के आतंकवादी तकनीक की समझ रखने वाले हैं। वे रासायनिक, जैविक, परमाणु और पारंपरिक हथियारों और आधुनिक संचार प्रणालियों के उपयोग में कुशल हैं, जो उन्हें और भी भयानक बनाता है।

बोध प्रश्न – I

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. आप 'आतंकवाद' शब्द को कैसे परिभाषित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

2. आतंकवाद के ऐतिहासिक विकास का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.4 आतंकवाद के कारण

आतंकवाद के कई कारण होते हैं जो सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं से जुड़े हो सकते हैं। निम्नलिखित को आतंकवाद के कुछ कारणों के रूप में देखा जा सकता है;

1. **निरन्तर विवाद की वास्तविकता :** आतंकवाद के जन्म का आधार संघर्ष होता हैं। हालाकीं, इन संघर्षों के कारण अलग–अलग हो सकते हैं। मूल रूप से, उद्देश्यों और विचारधाराओं में अंतर ही संघर्ष का रास्ता दिखाता है। इस आशय का ऐतिहासिक उदाहरण हैंरू विभिन्न जातीय, भाषाई, धार्मिक या सांस्कृतिक समूहों द्वारा क्षेत्र या संसाधनों का प्रभुत्व; विदेशी शासन से स्वतंत्रता की आकांक्षा; सरकार के एक विशेष रूप को लागू करना, जैसे लोकतंत्र, धर्मतंत्र, कुलीनतंत्र, या तानाशाही; जनसंख्या का आर्थिक स्तर (गरीबी); एवं अन्याय के वास्तविक या दृष्ट उदाहरण ।

2. **उचित निवारण प्रक्रिया का अभाव :** एक व्यवस्थित और उचित निवारण प्रणाली का अभाव निरंतर आतंकवादी गतिविधियां का कारण बनती हैं। यदि ऐसी व्यवस्था मौजूद होती, तो लोग उसका सहारा लेते और इस प्रकार परस्पर विरोधी स्थितियों का समाधान होता। जब ऐसी प्रणालियाँ उनके अभाव के कारण उपलब्ध नहीं होती हैं तो भ्रष्टाचार; या वहन करने योग्य लागत, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से घायल लोगों को स्वयं समाधान खोजने के लिए लुभाया जाएगा। इस प्रकार आतंकवादी गतिविधियाँ लोगों के एक निश्चित समूह के वैध अधिकारों से वंचित होने की भावना से उत्पन्न होती हैं, जिसके लिए वे दृढ़ संकल्प से मांग करते रहे हैं।

3. **व्यथित लोगों की कमजोरी :** जब एक वास्तविक निवारण प्रणाली के अभाव के साथ–साथ हिंसक विवाद होते हैं, तो बल द्वारा समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयास किया जाता है। इसका परिणाम विभिन्न प्रकार की संगठित हिंसा जैसे सांप्रदायिक दंगे और युद्ध हो सकता है। हालाँकि, आतंकवाद के माध्यम से हिंसा एक बदसूरत रूप लेती है, जब व्यथित लोगों को अपनी कमजोरी के कारण, प्रभुत्व को प्रभावित करने में असमर्थता का एहसास होता है। ऐसे में वे दमनकारी ताकतों का आमने–सामने या सीधे तौर पर सामना नहीं कर पाते हैं। इसलिए, वे भूमिगत हो जाते हैं और अपने उद्देश्य के लिए लड़ते हैं।

4. **भटकाव :** जब बच्चों और युवाओं का पालन–पोषण उनके माता–पिता या अभिभावकों द्वारा जिम्मेदारी से नहीं किया जाता है, उनके हिंसक समूहों या उग्रवाद में शामिल होने का एक उच्च जोखिम होता है। कुछ ऐसे स्वार्थी समूह होते हैं, जो मनगढ़त बातों में लेकर युवा दिमाग को अपने स्वार्थ के लिए, हथियार उठाने के लिए प्रेरित करते हैं तथा अक्सर धर्म, जातीय निष्ठा या राष्ट्रवाद के नाम पर नफरत की विचारधारा लोगों के दिमाग में डाली जाती है। ये घातक हथियारों के साथ विनाश करने के लिए युवाओं को प्रशिक्षित करते है। जब भटकावपूर्ण मकसद पूरा हो जाता हैं, तो इन युवाओं को सिखाया जाता है कि अपने दुश्मनों की मृत्यु और विनाश को एक शानदार उपलब्धि के रूप में मनाया जाय तथा इस प्रक्रिया में अपनी संभावित मृत्यु को वीर शहादत के रूप में देखें।

5. **जनसंचार माध्यम का प्रभाव :** जनसंचार माध्यम आतंकवाद और इससे जुड़े मुद्दों में गहरी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। हम अक्सर रेडियो स्टेशन, टेलीविजन चैनल, समाचार पत्र और वेब पेज को इस विषय पर चर्चा करते हुए पाते हैं। इन सभी के द्वारा प्रसारण दुनिया में लोगों के बड़े बरामदे तक पहुंचता हैं, जो विशेष रूप से पश्चिम के देशों में आतंकवाद के खतरे को उत्पन्न एवं भय को तेज करते हैं। मीडिया में दी गई व्यापक कवरेज एक आतंकवादी संगठन को अपनी योजनाओं के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि वे निश्चित रूप से जानते हैं कि उनके कृत्य से पूरी दुनिया को अवगत कराया जाएगा और इस प्रकार इस कारण पर अधिक ध्यान आकर्षित किया जाएगा। अक्सर, आतंकवादी गतिविधि का लाइव कवरेज हिंसा के अपराधियों को हिंसा स्थल से आसानी से दूर होने में मदद करता है। ऐसे मामलों में जनसंचार माध्यम आतंकवाद का अनिच्छुक सहयोगी बन सकता है।

6. **लोकतांत्रिक राज्य :** हालांकि शोधकर्ताओं का मानना है कि लोकतांत्रिक देश आमतौर पर आतंकवाद के प्रति कम संवेदनशील होते हैं, हालांकि वे भी आतंकी गतिविधियों से मुक्त नहीं हैं। आतंकवाद और लोकतंत्र के बीच एक जटिल संबंध है। यद्यपि एक अर्थ में लोकतंत्र अपने कुछ कारणों को कम करके आतंकवाद के जोखिम को कम करता है, दूसरे अर्थ में यह अक्सर इसकी व्यापकता में योगदान देता है। लोकतांत्रिक समाजों की खुली प्रकृति उन्हें आतंकवाद के प्रति संवेदनशील बनाती है। ऐसे समाजों में, नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा की जाती है, और सरकारी नियंत्रण और लोगों और उनकी गतिविधियों की निरंतर निगरानी न्यूनतम रखी जाती है।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि लोकतांत्रिक समाजों में आतंकवाद का खतरा बढ़ जाता है यदि कानून प्रवर्तन धीमा या अक्षम हो। ऐसे लोकतंत्रों में पीड़ित लोग, न्याय देने की देश की कानूनी प्रणाली की क्षमता में विश्वास खो चुके हैं, वे कानून को अपने हाथ में लेते हुए देखे जाते हैं, और यदि वे कमजोर हैं तो वे इसे गुप्त रूप से करते हैं।

7. **वैश्वीकरण :** यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण, हालांकि आतंकवाद का प्रत्यक्ष कारण नहीं है, यह अक्सर आतंकवाद के खतरे में योगदान दे सकता है। संचार और वित्तीय प्रणालियों का दुनिया भर में संपर्क, यहां तक कि विलय के कारण उत्पन्न स्थिति ने वैश्विक आतंकवाद को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। पुनः, इंटरनेट और सैटेलाइट फोन जैसे नए संचार ने चरमपंथी आतंकवादी और राजनीतिक संगठनों के लिए बड़े संगठनात्मक नेटवर्क बनाने, सूचनाओं का आदान–प्रदान करने और संसाधनों को संयोजित करना संभव बना दिया है।

8. **मनोवैज्ञानिक कारक :** कई मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि आतंकवाद को समझने की कुंजी लोगों को समझने में है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, आतंकवाद विशुद्ध रूप से मनोवैज्ञानिक ताकतों का परिणाम है, न कि तर्कसंगत, रणनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से एक सुविचारित रणनीति। इसलिए मनोवैज्ञानिक आतंकवादियों के दिमाग के अध्ययन पर जोर देते हैं। तदनुसार, छिपी हुई मानसिक गतिशीलता का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए हैं जो किसी व्यक्ति को बिना किसी विवेक के ऐसे कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं। एक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण है जो कहता है कि आतंकवादी सामान्य व्यक्ति होते हैं, जो अपनी गहरी भावनात्मक आवश्यकता और राष्ट्रवाद या धार्मिक भावना के आधार पर और प्रेरणा के उच्च स्तर के कारण उसे हिंसा का रास्ता

अपनाने के लिए मजबूर करते हैं। आतंकवाद को हाथ में लेने का एक अन्य कारण अकेलेपन को दूर करने की इच्छा भी हो सकता है। उनका दावा है कि कई आतंकवादी ऐसे लोग होते हैं जिन्हें समाज द्वारा किसी न किसी रूप में खारिज कर दिया जाता है और वे अकेले हो जाते हैं। चूंकि एक समूह का हिस्सा होना मानव स्वभाव में है, एक अलग–थलग, अकेला व्यक्ति स्वाभाविक रूप से किसी भी समूह की ओर आकर्षित होता है जो उसे स्वीकार करेगा, उसे लक्ष्य की भावना देगा, और उसे मौद्रिक लाभ के साथ–साथ इसे पूरा करने के तरीके और साधन प्रदान करेगा।

8.5 आतंकवाद के परिणाम

किसी भी राज्य में बढ़ते आतंकवाद के कई कारण हैं। ज्यादातर आतंकवादी धार्मिक और राजनीतिक विचारों से प्रेरित होते हैं, लेकिन इसके आर्थिक कारक भी होते हैं।

1. **पर्यावरणीय परिणाम :** आतंकवादी गतिविधियां अपनी कमजोर गतिविधियों से पूरे ब्रह्मांड को पंगु बना सकती हैं। यह कहा जा सकता है कि हर आतंकवादी हमला पूरे ब्रह्मांड को नीचा दिखाने का एक तरीका है। ब्रह्मांड, जो जीवन का वास है, जिसे मृत्यु और विनाश का स्थान बनाकर बदनाम किया जाता रहा है। यह तथ्य कि मनुष्य एक लौकिक वास्तविकता है, वह हर आतंकवादी गतिविधि के मद्देनजर स्वतः ही अमानुषिक हो जाता है। ब्रह्मांडीय ऋत (जो ब्रह्मांड के संचालन और उसके भीतर सब कुछ को नियंत्रित और समन्वयित करता है।) के खिलाफ जो कुछ भी किया जाता है वह ब्रह्मांड के सभी जीवित और निर्जीव प्राणियों को प्रभावित करने वाला होता है। अव्यवस्था, असामंजस्य और असंतोष के बीज बोना कई मनोदैहिकों का काम बन गया है।

2. **राजनीतिक परिणाम :** आतंकवाद सरकार पर भौतिक और मानसिक रूप से कमजोर करने के लिए प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह का दबाव बनाता है। आतंक का कार्य सरकार का सहयोग करके या जानकारी देकर लोगों को हतोत्साहित करना होता है। आम लोगों में सबसे गहरी चिंता तब पैदा होती है जब उन्हें कानून–व्यवस्था के चरमरा जाने का डर होता है। आतंकवाद सामाजिक व्यवस्था के पतन की दिशा में काम करता है और आतंकवादी इस स्थिति का फायदा उठाने के लिए उन्हें एक बेहतर विकल्प के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं। भय और चिंता की इस स्थिति में आवश्यक सेवाएं ठीक से काम नहीं करती हैं। राजनीतिक अराजकता से ही आतंकवाद का जन्म हुआ। आतंक में दो

पहलू शामिल हैं; पहला, किसी व्यक्ति या समूह के भीतर भय या चिंता की स्थिति और दूसरा, वह उपकरण जो भय की स्थिति उत्पन्न करता है। इस प्रकार, आतंक में राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करने के उद्देश्य से प्रतीकात्मक हिंसक कृत्यों की धमकी या उपयोग शामिल है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य पर राजनीतिक आतंकवाद फिर से उभर आया। 1960 ई. के दशक के दौरान, राजनीतिक आतंकवाद दूसरे चरण में प्रवेश करता हुआ दिखाई दिया। संभवत दो सबसे महत्वपूर्ण गुणात्मक परिवर्तन थे; पहला, इसका अंतरराष्ट्रीय चरित्र और दूसरा, एक आत्मनिर्भर रणनीति के रूप में इसका उदय, अर्थात्, बड़े राजनीतिक क्षेत्र से स्वतंत्र रूप से संचालन करना।

राजनीतिक आतंकवाद वैचारिकरूप से प्रेरित समूहों द्वारा एक सचेत निर्णय के परिणाम के रूप में होता है, जिसे उनके सदस्य किसी दिए गए समाज या राजनीति के भीतर अन्यायपूर्ण समझ सकते हैं। इसलिए, समकालीन राजनीतिक आतंकवाद के उत्तर इस व्यापक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक संदर्भ में खोजने होंगे।

3. **आर्थिक परिणाम :** आतंकवाद का उद्देश्य दुनिया में बड़े पैमाने पर आर्थिक प्रभाव को अधिकतम करना है। 11 सितंबर, 2001 के उस मंगलवार को ट्विन टावरों के विनाश ने वैश्विक आर्थिक परिदृश्य में बहुत भ्रम और अव्यवस्था पैदा कर दी है। चूंकि आतंकवाद के प्रत्येक कृत्य को इस तरह से प्रारूप दिया गया है कि इसका व्यापक प्रभाव दर्शकों पर पड़ता है, इसकी गूंज और बाद के प्रभाव बड़े पैमाने पर आर्थिक क्षेत्र में देखे जाते हैं। आतंकवाद के नेटवर्क का मुकाबला करने के लिए राष्ट्र और सरकारी मशीनरी खुद को नवीनतम तकनीकों से लैस करने के लिए मजबूर हैं। उन सभी में राष्ट्रीय निधियों का विभाजन शामिल है जिसका उपयोग अन्य उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, आतंकवाद किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को खराब करता है। किसी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में केवल उसकी वित्तीय स्थितियाँ शामिल नहीं होती हैं। यह मानव संसाधन, प्राकृतिक संसाधन, बौद्धिक शक्ति, सौंदर्य शक्ति, रचनात्मक शक्ति, और धन–शक्ति आदि जैसे सभी प्रकार की संपत्ति से संबंधित है। इसलिए, आतंकवाद के आर्थिक परिणाम सभी प्रकार की संपत्ति को प्रभावित करते हैं जिसके बिना मानव जीवन असंभव होगा।

8.6 आतंकवाद और सामाजिक नैतिक

आतंकवाद पिछले कुछ वर्षों में मानव के सम्पूर्ण विस्तार को अमानुषिक बनाने का एक तरीका बन गया है। आतंकवादियों के सिद्धांत विनाश और अमानवीयकरण में निहित हैं। नतीजतन, वे एक समाज के नैतिक पर्यवेक्षण को नियंत्रित करते हैं और एक घटिया अंतःकरण और एक बिखरी हुई नैतिकता के नागरिकों को गढ़ते हैं। आतंक केवल एक तर्कसंगत घटना नहीं है। यह लोगों के शरीर, मन और आत्मा को ढ़क लेता है तथा लोगों को चिंता और भय से लकवाग्रस्त बना देता है।

आतंकवाद अपने सभी रूपों में हमेशा गलत होता है। आतंकवाद मानव अधिकारों का उल्लंघन करता है, जिसमें नैतिक व्यक्ति के रूप में व्यवहार करने का मूल अधिकार भी शामिल है। मानवाधिकारों के संयुक्त राष्ट्र सार्वभौमिक घोषणा के अनुच्छेद 3 में अन्य बातों के अलावा कहा गया है कि सभी को जीवन का अधिकार है। इस तरह के एक सार्वभौमिक मानव अधिकार को स्वीकार करने का महत्व स्पष्ट है; मानव जीवन की सुरक्षा किसी भी चीज और हर चीज को महसूस करने की व्यक्ति की क्षमता की अनिवार्यता है और सभी मूल्यों को एक इंसान स्वयं या सवयं और दूसरों के संबंध में महसूस करने में सक्षम है।

एक घटना के रूप में आतंकवाद हमारे अध्ययन और चिंतन के लिए कुछ नैतिक प्रश्न उठाता है। समूह, क्षेत्रों और देशों के खिलाफ बढ़ते 'घृणा अभियान' समाज के सामान्य मनोबल को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार आतंकवाद विश्व की सभ्यता के लिए खतरा हो सकता है। क्योंकि, नैतिक रूप से व्यवहार करना सभ्य होने का एक हिस्सा है। हालाँकि, आतंकवादी किसी भी प्रेम और परोपकार से रहित होते हैं और जीवन की सच्चाई से अनभिज्ञ होते हैं। वे किसी भी कला, साहित्य और संगीत को विकसित करना पसंद नहीं करते हैं। वे दिन के उजाले की तुलना में रात के अंधेरे को पसंद करते हैं। वे अपनों के घर से अधिक अपने छिपने के स्थानों को पसंद करते हैं। वे अक्सर फिरौती के लिए बच्चों का अपहरण कर लेते हैं। शादी के चंद घंटों बाद भी शादीशुदा महिलाओं को अचानक विधवा कर देने पर उन्हें अपने ज़मीर का कोई मलाल नहीं होता है।

प्राचीन काल में मानव जीवन के प्रति अधिक सम्मान था। जब भी कोई युद्ध होता था, तो यह नियम हुआ करता था कि निर्दोषों को घायल न करने के लिए आपको सावधानी बरतनी होगी। किसी भी युद्ध में, यह प्रथा थी कि लोगों को युद्धों के प्रभाव से बचाया जाना चाहिए। युद्ध शुरू होने से पहले अक्सर लोगों को युद्ध क्षेत्र से हटा दिया जाता था। लेकिन दुर्भाग्य से आज की दुनिया में इंसान का जीवन बेकार हो गया है। आतंकी हमले

ज्यादातर उन जगहों पर किए जाते हैं जहां लोग भारी संख्या में इकट्ठा होते हैं जैसे पूजा स्थल, बाजार स्थान, परिवहन स्टेशन आदि।

मोटे तौर पर, नीतिशास्त्रीय विचार के अंदर दो प्रमुख परंपराओं के बीच अंतर किया जा सकता है, निरंकुश सिद्धांत, जो नैतिक कर्तव्यों को प्रमुखता देते हैं जो प्रकृति में अनिवार्य हैं और जो उपयोगितावादी प्रकल्पना है जो यह मानते हैं कि व्यवहार सही है अगर यह बहुमत की खुशी या कल्याण को अधिकतम करता है। उपरोक्त बिन्दु इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि हमें उन नियमों को बनाए रखना चाहिए जो सामान्य कल्याण को अधिकतम करेंगे यदि हर कोई उनका पालन करे, भले ही वे किसी विशेष घटना में ऐसा न करें; जबकि अनुवर्ती अल्पसंख्यकों की कीमत पर सामान्य कल्याण को अधिकतम करने की संभावना देता है।

सार्वभौमिक शांतिवादी नैतिक रूप से न केवल हत्या का, बल्कि सभी प्रकार की हिंसा का विरोध करते हैं। बीसवीं सदी के सबसे दिलचस्प शांतिवादी महात्मा गांधी हैं। उन्होंने अहिंसा के अपने सिद्धांत को विकसित किया जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत प्रभावी साबित हुआ, जिसका नेतृत्व उन्होंने सबसे आगे किया। विश्व नागरिक के रूप में, सभी को महात्मा गांधी के उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिनका जीवन दर्शन सत्य और अहिंसा के रत्नों के साथ मिश्रित था। उन्होंने एक राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए, और लाखों मनुष्यों के दिलों में प्रेम, शांति और चिरस्थायी आनंद के लिए एक रक्तहीन संघर्ष का नेतृत्व किया। सर्वोदय (सबका कल्याण) उनका रहस्य था। वह अंतःमानवीय और अंतर–मानवीय संबंधों की संस्कृति में विश्वास करते थे और प्रेम उनके द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला शक्तिशाली हथियार था। अंतर–मानव संबंध प्रेम और सम्मान के सिद्धांतों पर निर्मित होता है और यह मनुष्यों के बीच मौजूद होता है। अंतःमानवीय संबंध भी प्रेम और सम्मान पर आधारित होते हैं लेकिन यह केवल मनुष्यों के भीतर मौजूद होते हैं। यह अपने और दूसरे के जीवन की पवित्रता के सिद्धांत पर केंद्रित है। कहने का तात्पर्य यह है कि अंतर–मानव संबंध कभी भी किसी को आत्मघाती हमलावर बनने की अनुमति नहीं देता है, जो स्वयं को और अपने स्वयं के साथी मनुष्यों के लिए विनाश का कारण बनता है। इसी तरह, अंतर–मानव संबंध एक व्यक्ति के लिए एक व्यक्ति के रूप में दूसरे का सम्मान करने का मार्ग प्रशस्त करता है न कि किसी के अंत के लिए एक वस्तु या साधन के रूप में। गांधी सत्य और प्रेम में विश्वास करते थे।

आतंकवादी समूहों को नैतिक संहिताओं की स्थापना और उनका पालन करना चाहिए,जो उनके संघर्ष के आचरण को नियंत्रित करे। जहां तक संभव हो, इन मानकों को युद्ध को नियंत्रित करने वाले अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन करना चाहिए। आतंकवाद के कक्ष को व्यक्तियों की मानवीकरण प्रक्रिया का उल्लंघन करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

बोध प्रश्न – II

टिप्पणीः अ) अपने उत्तर के लिए दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

आ) अपने उत्तरों की जांच इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से कीजिए।

1. आतंकवाद के कारण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....2. नैतिकता के संदर्भ में आप आतंकवाद को कैसे समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

8.7 सारांश

वर्तमान परिदृश्य में आतंकवाद दुनिया की सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा है। इससे लोगों के मन में घृणा की गहरी भावना पैदा हो जाती है। यह अपने अंधाधुंध हमलों से विश्व शांति को नष्ट कर सकता है। आतंकवाद जीवन के मूल्य से संबंधित किसी भी आचार संहिता का पालन नहीं करता है। वे निर्दोष लोगों के विनाश के लिए खुद को समर्पित करते हैं। विश्व समुदाय के सदस्यों के रूप में हमें आज दुनिया में आतंकवाद के बढ़ते खतरे के मद्देनजर नैतिक मानकों के एक समुच्चय की दिशा में काम करने की जरूरत है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई तभी प्रभावी हो सकती है जब सरकारें विशेष रूप से आतंकवाद की रोकथाम और मुकाबला, पहचान, गिरफ्तारी और अभियोजन या

आतंकवादियों के प्रत्यर्पण से संबंधित प्रासंगिक सूचनाओं के आदान–प्रदान के माध्यम से अधिक निकटता से सहयोग करें। लोगों को अंतरराष्ट्रीय सोच के लिए शिक्षित किया जाना चाहिए। सभी शिक्षण संस्थानों में शांति शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

प्रत्येक मनुष्य और समाज को आतंकवादी गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली दुखद स्थितियों के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया देनी चाहिए, ताकि हमारी सामूहिक मानवीय भागीदारी बेहतर कल की संभावनाओं को बढ़ा सके। ऐसी सभी एजेंसियों को एक नैतिक ढांचे के तहत कार्य करने की आवश्यकता है, ताकि इसमें शामिल सभी लोग नैतिक रूप से इस तरह से की गई बुराइयों का जवाब दे सकें जो चरित्र में पूरी तरह से मानवीय हो।

8.8 कुंजी शब्द

- **मनोदैहिक विज्ञानः** मनोदैहिक का संबध एक विकार से है जिसमें लक्षण शारीरिक होते हैं लेकिन ये मानसिक या भावनात्मक कारणों से उत्पन्न होते हैं।
- **फासीवादः** फासीवाद एक राजनीतिक विचारधारा है जो कट्टरपंथी और सत्तावादी राष्ट्रवाद के लिए खड़ा है। फासीवादी एकल–पक्षीय राज्य के निर्माण की वकालत करते हैं। वे फासीवादी राज्य की उदारता और विरोध पर रोक लगाते और उसे दबाते हैं।
- **नाज़ीवादः** नाज़ीवाद एडॉल्फ हिटलर के अधीन नाज़ी पार्टी या नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी की सर्वसतावादी विचारधारा और प्रथाएँ हैं। यह फासीवाद का एक रूप है।

8.9 अन्य सहायक अध्ययन सामग्री एवं संदर्भ

- अलेक्जेंडर, योनाह एंड एस एम फिंगर. टेर्रोरिस्मः इंटेर्डिसिप्लिनरी पेर्स्पेक्टिवेस. यूनाइटेड किंगडमः द जॉन जे प्रेस, 1977.
- अर्नोल्ड, टेरेल एंड मूरहेड कैनेडी. थिंक अबाउट टेररिज्मः द न्यू वारफरे. न्यूयॉर्कः वॉकर एंड कंपनी, 1988.
- अट्टुमकल, मैथ्यू. ''ए न्यू मोड ऑफ देहुमानीजिंग पीपल इंटू 'टारगेट्स''. *जर्नल ऑफ धर्मा*, वॉल्यूम. XXXII, न०. 1 (जनवरी–मार्च, 2007), 73–84.

- बारकेर, जोनाथम. द नो–नॉनसेन्स गाइड टू टेररिज्म. जयपुरः रावत पब्लिकेशन, 2005.
- गोयल, अर्चना. टेर्रोरिस्मः कौसेस एंड कोंसेकुएंकेस. बीकानेरः इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायरनमेंट, 1990.
- मिसेली, विंसेंट पी. द रूट्स ऑफ वायलेंस. न्यूयॉर्कः द क्रिस्टोफर पब्लिशिंग हाउस, 1989.
- पेरुमालिल, ऑगस्टीन. ''टेर्रोरिस्मः द थ्रेट एंड रेस्पोंस.'' *एसएनसी जर्नल ऑफ इंटरकल्चरल फिलॉसफी*, न०.14 (अगस्त 2008), 26–64.
- कुद्दुस, अब्दुल. द मिराज ऑफ टेररिज्म. दिल्लीः अमरनाथ पेज, 2003.
- सक्सेना, एन.एस. टेररिज्मः हिस्ट्री एंड फैक्ट्स इन द वर्ल्ड एंड इन इंडिया. न्यू देलहीः अभिनव प्रकाशन, 1985.
- व्हाइट, जेम्स ई. कंटेंपररी मोरल प्रॉब्लेम्स (7 एड.). ऑस्ट्रेलियाः वड्सवर्थ एंड थॉमसन लर्निंग, 2003.

8.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1. ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड डिक्शनरी आतंकवाद को हिंसक कृत्य के प्रयोग के रूप में परिभाषित करती है ताकि राजनीतिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार को कार्य करने के लिए मजबूर किया जा सके। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका आतंकवाद को राजनीतिक उद्देश्य प्राप्त करने के लिए सरकारों, जनता या व्यक्तियों के खिलाफ आतंक या अप्रत्याशित हिंसा के व्यवस्थित उपयोग के रूप में वर्णित करती है। सामाजिक विज्ञान का विश्वकोश आतंकवाद को एक ऐसी विधि के रूप में परिभाषित करता है जिसके द्वारा एक संगठित समूह या पार्टी मुख्य रूप से हिंसा के व्यवस्थित उपयोग के माध्यम से अपने निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करना चाहती है।

2. आतंकवाद के इतिहास का पता उस समय से लगाया जा सकता है जब इतिहास दर्ज होना शुरू हुआ था। प्राचीन दुनिया में हम यहूदी राष्ट्रवादियों के एक समूह, ज़ीलॉट्स के नेतृत्व में पहला आतंकवादी आंदोलन देखते हैं, जिन्होंने यहूदिया में रोमन शासन का प्रतिरोध किया था। मध्य युग में, 13वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी तक आतंकवाद हमें विशेष

रूप से फ्रांसीसी क्रांति के दौरान देखने को मिलता है। आधुनिक और समकालीन युग में हम देखते हैं कि कई क्रांतिकारी समूह पूरे यूरोप, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका में उभर रहे हैं। जिन मुख्य साधनों का इस्तेमाल किया जा रहा है, वे हैं हत्याएं और बमबारी।

बोध प्रश्न II

1. आतंकवाद के कई कारण हो सकते हैं। वैचारिक और उद्देश्यपूर्ण मतभेद संघर्ष को जन्म दे सकते हैं, जिसे अगर सौहार्दपूर्ण ढंग से हल नहीं किया गया तो यह आतंकवाद को जन्म दे सकता है। यदि कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है जिसके द्वारा व्यवस्थित और उचित निवारण नहीं हो रह है, तो यह आतंकवादी गतिविधियों को जन्म दे सकता है। एक वास्तविक निवारण प्रणाली की अनुपस्थिति के साथ–साथ हिंसक विवाद, बल द्वारा समाधान खोजने का प्रयास किया जा सकता है। उग्रवादी ऐसे अन्य चरमपंथी समूह हैं जो लोगों के दिमाग को, विशेष रूप से युवाओं को आतंकवादी गतिविधियों के प्रति संवेदनशील बनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। जन संचार के माध्यम अपने व्यापक और गहन और कभी–कभी आतंकवादी गतिविधियों के सीधे कवरेज के साथ आतंकवादियों का अनिच्छुक सहयोगी बन सकता है। लोकतांत्रिक और दमनकारी समाजों के विपरीत यह देखा गया है कि लोकतांत्रिक समाजों में आतंकवादी गतिविधियों की आवृत्ति में वृद्धि हुई है। वित्तीय प्रणालियों और परिष्कृत संचार प्रणाली की उपलब्धता के कारण वैश्वीकरण से आतंकवादियों को भी बहुत मदद मिली है। आतंकवादी मूल रूप से अकेले लोग होते हैं जिन्हें कभी न कभी खारिज कर दिया जाता है। इसलिए वे इस प्रकार की हिंसा को एक लक्ष्य की भावना रखने के लिए करते हैं और उन्हें मौद्रिक लाभ के साथ–साथ इसे पूरा करने के तरीके और साधन प्रदान करते हैं।

2. नैतिकता के संदर्भ में आतंकवाद को निश्चय ही विश्व की सभ्यता के लिए खतरा कहा जा सकता है। आतंकियों को इंसानी जान की परवाह ही नहीं है। नैतिक विचार की दो प्रमुख परंपराएं हैं, एक निरंकुश सिद्धांत और दूसरा उपयोगितावादी प्रकल्पना। दोनों की अपनी कमियां हैं। इस परिदृश्य में गांधी जी के सर्वोदय (सबका कल्याण) के उदाहरण का अनुसरण करने की आवश्यकता है। अंतर–मानवीय संबंधों और अंतःमानवीय संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।